Topic - 85 कर्म कारक - 2

अकथितं च ॥

अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् ॥

दुहयाचपचदण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथुमुषाम् ।

कर्मयुक्तस्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ॥

दुहादीनां द्वादशानां तथा नीप्रभृतीनां चतुर्णां कर्मणामेव युज्यते तदेव अकथितं कर्म इति परिगणनं कर्तव्यमित्यर्थः ।

गां दोग्धि पयः । बलिं याचते वसुधाम् । अवनीतं विनयं याचते । तण्डुलानोदनं पचति । गर्गान् शतं दण्डयति । व्रजमवरुणद्धि गाम् । माणवकं पन्थानं पृच्छति । इक्षुमवचिनोति फलानि । माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा । शतं जयति देवदत्तम् । सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति । देवदत्तं शतं मुष्णाति । ग्राममजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा । अर्थनिबन्धनेयं संज्ञा । बलिं भिक्षते वसुधाम् । माणवकं धर्मं भाषते अभिधत्ते वक्तीत्यादि । कारकं किमु ? माणवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति ॥

अपादान आदि विशेष कारकों से अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक हो ।

अर्थात् दुह्, याच् आदि में तथा उनके अर्थवाली अन्य धातुओं में जहाँ अपादान आदि विशेष कारकों की विवक्षा न की जाय वहाँ इन कारकों की कर्मसंज्ञा होती है तथा ये गौण कर्म कहलाते हैं। दुहयाच् इत्यादि कारिका में वर्णित दुहादि 12 धातुओं तथा नी आदि चार धातुओं के कर्म से जो युक्त होता है वही अकथित कर्म कहलाता है। इस प्रकार उनका परिगणन कर लेना चाहिए। यही इस कारिका का अर्थ है

व्रज में गाय को रोकता है।

यह गौण कर्मसंज्ञा अर्थनिबंधन है। अर्थात् कारिका में प्रतिपादित दुह आदि की अर्थवाली धातुओं के प्रसंग में भी यह गौण कर्मसंज्ञा होती है। अतः (वामनः) बलिं भिक्षते वसुधाम् इस वाक्य में याचना अर्थवाले भिक्ष् धातु के प्रयोग में भी बलि अपादान की कर्मसंज्ञा होती है।

कारकं किम् ? ग्रन्थकार प्रश्न करता है कि इस 'अकथितं च' सूत्र में कारक पद का ग्रहण क्यों किया ? उत्तर देते हैं- (मानवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति।' मानवक (ब्रह्मचारी) के पिता से मार्ग पूछता है। यहाँ ~~मानवक~~ पृच्छति क्रिया का संबंध पिता से ही है, मानवक से नहीं। मानवक का तो पिता से जन्यजनक-भाव संबंध है। अतः उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। षष्ठी विभक्ति कारकों के अन्तर्गत नहीं है, इसलिए कारकत्व के अभाव से उसमें द्वितीया नहीं होती। यदि कारक ग्रहण न करते तो यहाँ भी अनिष्ट